केवल मूल्यांकनकर्ता के उपयोग हेतु!

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

32 पृष्ठीय

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे। प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	[…]ों में)	प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	[…]क (अंकों में)
1			17		
2			18		
3			19		
4			20		
5			21		
6			22		
7			23		
8			24		
9			25		
10			26		
11			27		
12			28		
13					
14					
15			[…]कों में		
16					

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अंकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर […]मुद्रा	परीक्ष[…]वं निर्धारित मुद्रा
श्रीमती वनि[…] UJ-534	श्री[…]विनता भारद्वाज UJ-547

DUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION OND.

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. १ (1)

१. भी।

२. 1556।

३. दो।

४. अर्थालंकार।

५. भगत जी।

६. मराठी।

प्र०२. प्रश्न क्र. २ (2)

१. जैनेन्द्र कुमार।

२. तीन।

क अंक कुल अंक

ONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYED

प्रश्न क्र.

3. पाठशाला|

4. ौकिक काटकाम|

5. भार|

6. व्यतिरेक|

प्रश्न क्र॰3 (3)

1. सत्य

2. सत्य

3. सत्य

4. सत्य

5. असत्य

RYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MA...H,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

६. असत्य।

प्रश्न क्र० ४. (५)

(क)		(ख)
९. कथानक	→	कहानी।
२. संस्कृत के मूल शब्द	→	तत्सम।
३. यशोधर बाबू	→	सिल्वर वैडिंग।
४. अंतरंग साक्षात्कार	→	डायरी।
५. हरिवंश राय बच्चन	→	हालावाद।
६. प्रगतिवाद	→	देशज।
७. यशोधरा	→	खण्डकाव्य।

BSE

5

प्रश्न क्र.

प्र० क्र० ५ (5)

उ० १ मोहनजोदड़ो

उ० २ 15-20 ~~मीनिट मीनिट मीनीट~~ | मिनिट

उ० ३ दुष्यन्त कुमार

उ० ४ झोंका |

उ० ५ इन दिनों |

उ० ६ दो |

उ० ७ बड़ी | ~~मुश्किल मुश्किल से बचना |~~ किसी बड़ी समस्या से बचना |

प्रश्न क्र. ६ (6)

उ० भक्तिन के आने से महादेवी वर्मा अधिक देहाती हो गई थी ~~क्य~~ क्योंकि भक्तिन महादेवी जी को अपने रंग मे रंग

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र

दिया था। भक्तिन महादेवी जी को अपने हिसाब से खान-पान करती थी। भक्तिन ने महादेवी जी को अपने अनुसार मट्टी से जुड़ा, सरल व सहज देहाती बना दिया था।

प्रश्न क्र. 8. (7)

B 30
S
F

	कहानी	उपन्यास
1.	कहानी एक ही कथा पर आधारित होती है एवं कहानी पात्र भी कम होते है।	उपन्यास कई कथा व प्रसंग से मिल कर बनता है एवं उपन्यास मे पात्र भी अधिक होते है।
2.	कहानी का आकार छोटा होता है एवं गति तीव्र होती है।	उपन्यास का आकार बड़ा होता है एवं गति धीमी होती है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

ON ONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARY

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. ८ (8)

उ. 'निपात' शब्द वो शब्द होते है जो किसी शब्द के आगे या बाद मे लगा का शब्द के अर्थ मे विशेष बल देते है।

...रण :- भी, तो, मात्र आदि

वाक्य प्रयोग :- मुझे भी किताब चाहिए।

B
S
E

प्रश्न क्र. ९ (9)

उ. १. राम अयोध्या आ जाना।

. ललिता ~~एक~~ फूलों की माला बाजार से ~~ले आई~~ लाई।

प्रश्न क्र १० (10)

मुअनजो - दड़ो की नगर नियोजन की दो विशेषताएं निम्न है:

(8)

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYAPRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

9. मोहन मुअनजो-दड़ो के घर पक्की ईंट से बनाए गये है एव नगर नियोजन बहुत ही आकर्षक है।

मुअनजो-दडो के घरों मे स्नानघर भी बने हुए है एवं नालियों का योजन भी सही प्रकार से किया है।

मुअनजो-दडो मे सबसे ज्यादा स्नानघर, कुएँ, कुंड आदि प्राप्त हुए है एवं रसोई घर भी बनाए गए है।

प्रश्न क्र. 99 (11)

उ०. समाचार लेखन की सबसे लोकप्रिय शैली उल्टा पिरामिड शैली है। इस शैली का क्लाईमेक्स पहले ही बता दिया जाता है। इस शैली मे धीरे धीरे-धीरे खबर की पूरी जानकारी दी जाती है। कब, कैसे, कौन, कहा, क्या जैसे प्रश्नवाचक शब्दो के आधार पर पूरी खबर की जानकारी विस्तार मे दी जाती है। इस शैली को समाचार लेखन मे बहुत लोकप्रिय माना जाता है।

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. १२ (12)

उ० बच्चे अपने माता-पिता की प्रत्याशा मे नीडो से झांक रहे है। वे सुबह से ~~ब~~ गए भोजन की खोज मे अपने माता-पिता के घर लौटने की आशा मे है। भुख से व्याकुल और अपने माता-पिता के ~~बालक~~ वात्सल्य से वंचित बच्चे उनकी प्रतिक्षा मे नीडो से झांक रहे है।

प्रश्न क्र. १३ (13)

उ. द्विवेदी युग जिसे पुन जागरण काल के नाम से भी जाना जाता है उसके बाद छायावादी युग आया जिस मे कई कवियो ने अपने मन के भावो को व्यक्त करते हुए प्रेम सौन्दर्य और रहस्यवाद मे कई प्रसिद्ध-प्रसिद्ध रचनाए की।

लेखिका महादेवी वर्मा जी है जिनकी कई रचनाए प्रेम सौन्दर्य, नारी सौन्दर्य एवं प्रकृति सौन्दर्य से पूर्ण है। यामा, नीरजा, नीहार, भक्तिन आदि प्रसिद्ध रचनाएँ।

छायावाद ~~किकी~~ की प्रमुख विशेषता यहा है कि इस युग मे

पृष्ठ 10 के अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

श्रृंगार रस, नई बिम्ब, प्रतिबिम्ब, छन्द, अंलकारों का प्रचुर मात्रा मे प्रयोग देखने को मिलता है।
दूसरी विशेषता यह है कि इस युग की भाषा बहुत ही सरल व सरल है।

प्रश्न क्र. १४ (14)

महाकाव्य	रचनाकार
१. रामचरितमानस	तुलसीदास जी
२. कामायनी	जयशंकर प्रसाद

प्रश्न क्र. १५

30. जब सहृदय के हृदय मे स्थित उत्साह का ~~स्थाई भाव~~ भाव जब विभाव, अनुभाव एंव संचारी भाव के सहयोग मे आता है तब वीर रस उत्पन्न होता है। राष्ट्रीयता, त्याग, शौर्य, बलिदान, वीरता आदि

मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

इस रस कि विशेषता है। इसका स्थाई भाव 'उत्साह' है।

ण :- बुन्देले हरबोलो के मुख हमने सुनी कहानी थी।
खूब ~~खुब~~ लड़ी मर्दानी वो तो झाँसी वाली रानी थी।।

प्रश्न क्र १६ (16)

(महादेवी वर्मा)

दो रचनाएँ :- नीरजा, नीहार, यामा आदि।

भाषा :- महादेवी जी एक बहुत सी सरल व सहज ~~व्यक्तित्व~~ लेखिका थी। उनकी भाषा बहुत ही सरल व सधी हुई थी। उनकी भाषा मे उर्दू, फारसी, बांग्ला और विदेशी भाषा के भी शब्दो का भी सुन्दरता से प्रयोग देखने को मिलता है। उन्होने अपनी ~~क~~ रचना मे संस्कृत शब्दावली का भी प्रयोग किया है। भाषा को प्रभावशाली बनाने के लिए मुहावरे, लोकोक्ति, अनेक शब्द के लिए एक शब्द आदि का प्रयोग बड़ी ही आकर्षकता के साथ किया है।

शैली :- महादेवी ~~वाम~~ वर्मा जी कि कुछ निम्न लिखित ~~रचनाएँ~~ शैलियाँ है :-

B
S
E

मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

B
S
E

1. वर्णनात्मक :- जब उन्हे अपनी किसी रचना मे किसी वस्तु, घटना, स्थान, व्यक्ति आदि का वर्णन करना होता था तब वह इस शैली का प्रयोग करती थी।

2. भावात्मक शैली :- महादेवी वर्मा जी को भावो का बहुत अच्छा ज्ञान था वे मानव भावो को समझ कर अपनी रचना मे बताती थी। वह बहुत भावात्मक लेखिका थी। दिन-दलित, मजदूर शोषण, नारी अपमान के भावो को लिख कर समाज मे सुधार लाना चाहती थी।

साहित्य मे स्थान :- महादेवी वर्मा जी एक उच्चकोटि की लेखिका थी। उन्होने गम्भीर विषयो को सरलता के साथ समाज के सामने प्रस्तुत किया। इनकी प्रसिद्ध रचना 'यामा' को ज्ञानपीठ पर पुरस्कार से भी सम्मानित किया गया। वह माँ सरस्वती और मीरा बाई की जैसे इस हिन्दी साहित्य के नीले आकाश मे ध्रुव तारे के समान सदैव चमकती रहेगी। हिन्दी साहित्य उन्हे नमन करता है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र १८ (17)

उ०	मुहावरा	लोकोक्ति
१.	मुहावरे को वाक्य के आगे या पीछे लग कर भाषा को प्रभावी बनाता है।	लोकोक्ति तो अपने आप मे ही सपुर्ण वाक्य होती है।
२.	मुहावरे का कोई दूसरा नाम नही होता है।	लोकोक्ति को कहावतो के नाम से भी जाना जाता है।
	मुहावरे भाषा मे चमत्कार लाते है	लोकोक्ति भाषा मे स्थिरता लाती है।
४.	उदाहरण :- अन्धे की लाठी	उदाहरण :- अन्धों मे काना राजा

BSE

प्रश्न क्र १८ (18)

रघुवीर सहाय

दो रचनाएँ [illegible] ो, हँसो जल्दी हँसो, लोग भूल गए है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

~~भाव~~ पक्ष :- 1. भाषा :- रघुवीर सहाय जी एक बहुत ही प्रसिद्ध लेखक है। उनकी भाषा
कला
बहुत ही सरल व सहज है। उन्होंने मुहावरो का भी प्रचुर मात्रा मे प्रयोग किया। उनकी भाषा मे हिन्दी तद्भव शब्दावली और संस्कृत तत्सम शब्दावली का सुन्दरता के साथ प्रयोग किया है। उर्दू, फारसी, अंग्रेजी आदि भाषाओं के शब्दो की भी प्रयोग देखने को मिलता है।

2. छन्द एवं अलंकार :- शब्दालंकार और अर्थालंकार दो प्रमुख अलंकार थे। उन्होने छन्दो का भी प्रयोग किया है। उन्होंने मुक्तक छन्द को एक नई पहचान दी है।

भाव पक्ष :- 1. ~~चित्रात्मक~~ :- उनकी रचनाओं के गम्भीर भ्रष्टाचार विरोध विषयों को उन्होंने सरलता व सहजता से समाज के सामने प्रस्तुत किया है। वह भ्रष्टाचारियों के खिलाफ लिख कर समाज मे सुधार लाना चाहते थे।

~~चित्रात्मक~~ राष्ट्रीयता एवं देश प्रेम :- सहाय जी की रचनाओं मे देश प्रेम का स्वर

B
S
E

मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

स्पष्ट दिखाई देता है। वह एक देश भक्त थे। वह अपने राष्ट्र से बहुत प्रेम करते थे। उनकी रचनाओं मे राष्ट्रीयता का स्वर है।

साहित्य मे स्थान :- सहाय जी एक बहुत ही अच्छे कवि थे। उनकी रचनाएँ आज भी लोगो को प्रेरणा देती है। उनकी रचनाएँ ~~पढ़~~ पढ़ कर एक हताश व निराशा व्यक्ति को भी आशा मिल जाती है। हिन्दी साहित्य उनकी साहित्य सेवा के लिए उनका हमेशा ऋणी रहेगा।

S
E

प्रश्न क्र १९ (19)

उ०१ 'हमारा प्यारा भारत'

उ०२ एकता मे अनेकता भारतवासियों की विशेषता है।

उ०३ हम अपने देश पर प्राण भी न्यौछावर कर सकते है।

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. २० (20)

प्रात — — — — — — — — — — — — — — हो।

संदर्भ :- यह पद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह' के भाग २ के पाठ 'उषा' से ली गई है। उसके ~~के~~ कवि श्री शमशेर बहादुर सिंह जी है।

प्रसंग :- इस पद्यांश मे कवि भोर का वर्णन कर रहे है। वह उस अद्भुत ~~दृश्य~~ दृश्य को देखकर बहुत प्रसन्न है।

व्याख्या :- कवि कहते है कि जब प्रात: मे आकाश एक नीले शंख के समान गहरा नीले रंग का हो रहा है वही से कही हल्की - हल्की सूर्य की लाल - लाल किरणे उस आकाश मे आकार मिल रही है। यह दृश्य मन को शान्ति का आभास करा रहा है। ~~ऐ~~ ऐसा लग रहा है मानो किसी ने चौके को राख से लीप दिया है। उस अकाश मे हल्के - हल्के सफेद कर्ण भी दिखाई दे रहे है।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

गहरे नीले आकाश मे सूर्य की कुछ किरणे ऐसी प्रतित हो रही है मानो किसी सिलजरा पर केसर के कुछ कर्ण डाल कर उसे धो दिया है और केसर का लाल रंग रह गया हो। यह दृश्य बहुत ही मनोरम है।

काव्य सौन्दर्य :- १. भाषा मे ~~सरला~~ सरलता व सहजता है।
२. शान्त रस विद्यमान है।
३. प्रात: के मनोरम दृश्य का वर्णन बहुत ही सुन्दरता के साथ किया है।
४. काव्य मे रूपक अलंकार भी है।

प्रश्न क्र. २१ (२)

यह शिरिष - — - — — — — - — — — - — - है।

संदर्भ :- यह गद्यांश हमारी पाठ्य पुस्तक 'आरोह' के भाग दो से लिया गया है इस पाठ का नाम 'श्री शिरीष के फूल' है। यह पाठ निबंध विद्या मे लिखा गया है। इसके रचयता श्री हजारी प्रसाद द्विवेदी जी है।

UCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

प्रसंग :- इस गद्यांश में कवि शिरीष के फूल के माध्यम से मनुष्य के जीवन की समस्याओं से निडरता से सामना करने का ज्ञान देता है।

व्याख्या :- कवि इस गद्यांश में कहना चाहते हैं कि ~~शिरीष~~ शिरीष का फूल अवधूत है यानी सन्यासी। वह कितनी भी विकट परिस्थिति में हार नहीं मानता है। उसी प्रकार ~~किसी की~~ कोई भी समस्या सन्यासी के जप क में बाधा नहीं डाल सकती है। वह हर परिस्थिति का सामना करता है ~~वह~~ वह अपने से प्रकृति में चार चाँद लगा देता है। वह हर सुःख को सहन कर लेता है। जब धरती आसमान गर्मी से जलते हैं तब वह अपनी सुन्दरता से अपना रस बनाता है। वह हर विकट परिस्थिति का सामना करने की प्रेरणा देता है।

विशेष :- शिरीष के पुष्प के माध्यम से जीवन मूल्यों को समझाया गया है।
गद्य की भाषा ~~सरल~~ सरल व सधी हुई है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

पत्र

149, रवि नगर
ग्वालियर, (म०प्र०)

प्रिय मित्र महक,

मैं आशा करती हूँ कि सब कुशल मंगल होगा। मेरे बड़े भाई की शादी 27 फरवरी से 1 मार्च की है। मैं चाहती हूँ कि तुम मेरे भाई की शादी मे सप्रेम अपने पूरे परिवार के साथ आओं। तुम मेरे घर ~~26~~ 26 फरवरी को ~~भी~~ भी आ सकती हो।

आशा करती हूँ कि तुम तुम्हारे पूरे परिवार के साथ शादी मे जरूर पधारोगी।

दिनांक :- 06/02/2024

तुम्हारी सहेली
ऐश्वर्या।

CATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

निबन्ध

रूपरेखा :- १. प्रस्तावना।
२. प्रदूषण क्या है।
३. प्रदूषण के प्रकार।
४. प्रदूषण से प्रकृति एवं मानव जीवन मे हानि।
५. उपसंहार

१. प्रस्तावना :- आज हम प्रदूषण से चारो तरफ से बन्ध चुके है। हम मानवो ने मिल कर पूरा वातावरण दूषित कर दिया है। जिससे अब हमारा जीवन ही खतरे मे आ गया है। अब तो खुली हवा भी नही है सांस लेने के लिए।

२. प्रदूषण क्या है :- प्रदूषण दो शब्दो से मिल कर बना है 'प्र' और 'दूषण'।
हमने हमारे हाथों से पेड काट कर, जल दूषित कर, हमारे मौत के द्वार खोल दिए है। आने वाले समय मे सांस लेना भी मुशकिल हो जाएगा। हम आज और हमारे आने वाले कल को नुकसान पहुंचा रहे है।

योग पूर्व पृष्ठ

ON ONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARY

B S E

प्रश्न क्र.

उ. प्रदूषण के प्रकार :- प्रदूषण चार प्रकार के होते है :- वायु, जल, मिट्टी एवं ध्वनि।

उ.1. वायु प्रदूषण :- आज कल बहुत मोटर गड़िया चलती है जिसमे से हानिकारक धुआ निकलता है और वायु को प्रदूषित कर देता है। कारखानों मे से भी बहुत हानिकारक धुआ निकलता है जो ओक्सीजन को दूषित करता है। आज के समय मे शहरों मे शुद्ध वायु बची ही नही है।

उ.2. जल प्रदूषण :- आज हम हमारे पालतु जानवरो को, कपड़ो को, बरतनो को ले जाकर जल स्त्रोत मे साफ कर रहे है इस से जल बहुत दूषित हो रहा है। कारखानों का खराब पानी भी नदियो, नालाबो मे मिला दिया जाता है। जल से ही मानव का जीवन है अगर हमने यह सब ना रोका तो मानव के जल पान के लिए भी जल नही बचेगा।

उ.3. मिट्टी :- प्लास्टिक का समान, थैली आदि वस्तुएं मिट्टी को दूषित कर रही है जिससे पेड़-पौधो की मिट्टी भी दूषित हो रही है और वह जल्दी गीर जाते है।

DUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION

प्रश्न क्र.

ध्वनि प्रदूषण :- ध्वनि प्रदूषण से आज कल कई बीमारिया हो रही है लोग अपने सुनने की शक्ति खो रहे है। लोगो का मानसिक सन्तुलन खराब हो रहा है।

४. प्रदूषण से प्रकृति एवं मानव जीवन मे हानि :- प्रदूषण के कारण अब जीवन बहुत कठिन होता जा रहा है अनेक प्रकार की बीमारियाँ हो रही है। जल दूषित हो रहा , पेड़ काटे जा रहे है, वायु धुएँ से दूषित हो चुकि है, मिट्टी दूषित होने के कारण फसल खराब हो रही है। मानव प्रदूषण के साथ नही जी सकता है।

समाधान :- हमे हमारे आस-पास के प्रदूषित जगह को साफ करना चाहिए। पेड़-पौधे लगाना चाहिए। जल प्रदूषण रोकना चाहिए। कम से कम वाहनो का प्रयोग करना चाहिए एवं ज्यादा से ज्यादा पैदल यात्रा करना चाहिए। यह हमारे स्वास्थ्य के लिए भी शुभ होगा।